



SHRI MADHU MANSURI HASMUKH

Shri Madhu Mansuri Hasmukh is a famous Nagpuri/Sadri folk singer, dancer and composer. He belongs to Oraon tribe of Jharkhand. He is known for his contribution to stop 'Nauch Girls' in Chottanagpur and to stop women migration with his powerful poetic songs in traditional composition. Shri Hasmukh is also known for his song on Nature (Water, Forest, Land) and regional identity.

2. Born on 4th September, 1948, Shri Hasmukh inherited love for performing in traditional and semi-modern Nagpuri folk style from his parents Balak alias Abdul Rehman and Mani Praveen. His performing journey started as a child performer in 1956 on the Foundation Day of Ratu Block of Ranchi in presence of Maharaja Chintamani Sharan Nath Shandeo. His educational journey lasted only till class IX but cultural bastion is still held in his hand. The credit of transition of folk performance from courtyard of lords to stage took concrete shape at famous Munna Mela (annual Oraon congregation meet).

3. Shri Hasmukh has acted and sung in first Nagpuri film 'Gadi Lohardaga Mail' and Bollyhood movie Lohardaga. Since inception of Ranchi Akashvani (1956), he has been serving as a Nagpuri artist. He has to his credit several cassettes of songs in support of separate Jharkhand statehood which has won him the recognition of Jharkhand Krantikari' by the State Government. The documentary 'Gaon Chodab Nahi' (shall not leave my village) under the title 'Yugpurush' is also bestowed upon him. He has also participated in International Dance Festival-Taiwan 1992 sponsored by State Govt. of Bihar.

4. Shri Hasmukh has received various awards and honours including Certificate of Appreciation by Govt. of Bihar 1982;Certificate of Appreciation by Education Minister Govt. of Bihar 1983; Certificate of Appreciation by Ministry of Culture and Youth Affairs, Bihar 1985; Felicitation Certificate by St. Xaviers College, Calcutta, 1991; Felicitation by Akhil Bharatiya Adivasi Vikash Parishad,1992; Appreciation certificate by International Human Rights Organisation, 2000 (Maharashtra); Vihangam Pratibha Samman, Ranchi Doordarshan, 2010; Felicitation by Department of Culture, Govt. of Goa, 2017; Felicitation by Sangeet Natak Department Information and Broadcasting, Regional Office, Ranchi; Jharkhand Ratna' 2011 by Civil Society Jharkhand; 'Jharkhand Vibhuti' by Dainik Jagran Newspaper; Life Achievement Award by Department of Art and Culture, Govt. of Jharkhand etc.





श्री मधु मंसुरी हसमुख

श्री मधु मंसुरी हसमुख एक प्रसिद्ध नागपुरी/सदरी लोक गायक, नर्तक और संगीतकार हैं। वह झारखंड की उरांव जनजाति से ताल्लुक रखते हैं। उन्हें छोटा नागपुर में 'तवायफों के नाच' को रोकने और अपने सशक्त पारंपरिक काव्यात्मक गीतों के माध्यम से महिलाओं के प्रवास को रोकने में उनके योगदान के लिए जाना जाता है। श्री हसमुख प्रकृति (जल, जंगल, जमीन) और क्षेत्रीय पहचान पर आधारित अपने गीतों के लिए भी प्रसिद्ध हैं।

2. 4 सितंबर, 1948 को जन्मे, श्री हसमुख को पारंपरिक और अर्ध–आधुनिक नागपुरी लोक शैली में अभिनय करने की कला विरासत में अपने माता–पिता बालक उर्फ अब्दुल रहमान और मणि प्रवीण से प्राप्त हुई। उनके कला जीवन की शुरुआत 1956 में रांची के रातू ब्लॉक के स्थापना दिवस के अवसर पर, महाराजा चिंतामणि शरण नाथ शानदेव की उपस्थिति में एक बाल कलाकार के रूप में प्रस्तुति से हुई। वह केवल नौवीं कक्षा तक शिक्षा प्राप्त कर सके, परंतु उनके पास पहले से ही सांस्कृतिक शिक्षा निधि मौजूद थी। उन्होंने लोक प्रदर्शन को जमींदारों के दरबार से मंच तक पहुंचाने के विचार को प्रसिद्ध मुन्ना मेले (वार्षिक ओरांव का मेला) के माध्यम से साकार रूप दिया।

3. श्री हसमुख ने पहली नागपुरी फिल्म 'गादी लोहरदगा मेल' और बॉलीवुड फिल्म 'लोहरदगा' में अभिनय और गायन किया है। रांची आकाशवाणी (1956) की स्थापना के बाद से, वह एक नागपुरी कलाकार के रूप में काम कर रहे हैं। अलग झारखंड राज्य के समर्थन में उनके गीतों की कई कैसेट भी जारी हुईं, जिसके लिए उन्हें राज्य सरकार द्वारा झारखंड क्रांतिकारी की उपाधि दी गई है। डॉक्यूमेंट्री 'गाँव छोड़ब नाही' के लिए भी उन्हें 'युगपुरुष' से नवाजा गया है। उन्होंने बिहार राज्य सरकार द्वारा प्रायोजित अंतरराष्ट्रीय नृत्य महोत्सव–ताइवान 1992 में भी भाग लिया है।

4. श्री हसमुख को कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं, जिनमें 1982 में बिहार सरकार का प्रशंसापत्र; 1983 में बिहार सरकार के शिक्षा मंत्री द्वारा प्रशस्तिपत्र; 1985 में संस्कृति और युवा मामलों के मंत्रालय, बिहार द्वारा प्रशस्तिपत्र; 1991 में सेंट जेवियर्स कॉलेज, कलकत्ता द्वारा सम्मानपत्र; 1992 में अखिल भारतीय आदिवासी विकास परिषद द्वारा सम्मानपत्र; 2000 में अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन, (महाराष्ट्र) द्वारा प्रशस्तिपत्र; 2010 में विहंगम प्रतिभा सम्मान, रांची दूरदर्शन; 2017 में संस्कृति विभाग गोवा द्वारा सम्मानय संगीत नाटक विभाग, सूचना प्रसारण, क्षेत्रीय कार्यालय, रांची द्वारा सम्मान; 2011 में सिविल सोसायटी झारखंड द्वारा झारखंड रत्न; दैनिक जागरण समाचार पत्र द्वारा 'झारखंड विभूति'; कला और संस्कृति विभाग, झारखंड सरकार द्वारा लाइफ अचीवमेंट अवार्ड आदि शामिल हैं।